RNI / MEGHIN / 2016/72034

ISSN : 2231-6132

# समन्वय पूर्वोत्तर

खंड-2, संयुक्तांक 3-4, आषाढ़-मार्गशीर्ष 2075/जुलाई-दिसम्बर 2018

पूर्वोत्तर एवं पूर्वी भारत की भाषा, साहित्य एवं समाज केंद्रित पत्रिका

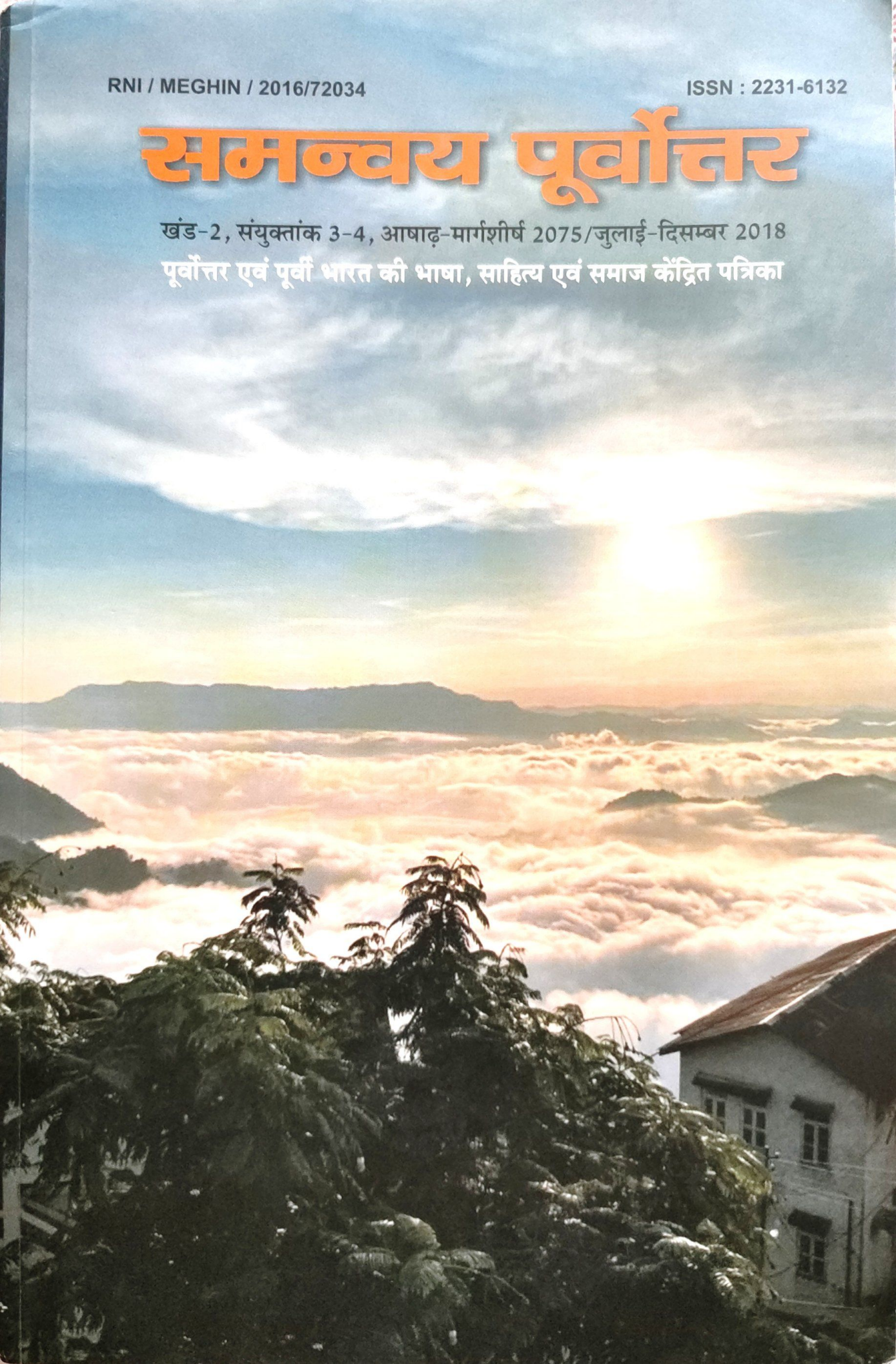

RNI/MEGHIN/2016/72034

ISSN : 2231–6132

# समन्वय पूर्वोत्तर

## पूर्वोत्तर एवं पूर्वी भारत की भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं समाज केंद्रित पत्रिका

खंड-2, संयुक्तांक : 3-4, आषाढ़-मार्गशीर्ष, 2075/जुलाई-दिसंबर, 2018

**संरक्षक**

**डॉ. कमल किशोर गोयनका**

उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

ईमेल–kkgoyanka@gmail.com

**परामर्श मंडल**

**प्रो. दिनेश कुमार चौबे**

प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय

(नेहू) शिलांग-22

**प्रो. अनंत कुमार नाथ**

प्रोफेसर, हिंदी विभाग

तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर

**प्रो. दिलीप कुमार मेधि**

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,

हिंदी विभाग,

गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी

**प्रकाशन सलाहकार**

**डॉ. स्वर्ण अनिल**

केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, दिल्ली

ईमेल–swarananil16@gmail.com

**प्रधान संपादक**

**प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय**

निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ईमेल–nkpandey65@gmail.com

**संपादक**

**डॉ. राजवीर सिंह**

क्षेत्रीय निदेशक, गुवाहाटी केंद्र

**सह-संपादक**

**डॉ. चंद्रशेखर चौबे**

क्षेत्रीय निदेशक, दीमापुर केंद्र

**डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय**

क्षेत्रीय निदेशक, शिलांग केंद्र

**सुश्री रिया सिंह**

दीमापुर केंद्र, दीमापुर

**सहयोग**

**डॉ. उमेश चन्द्र**

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ईमेल–umeshchandra448@gmail.com

**केंद्रीय हिंदी संस्थान**

क्षेत्रीय केंद्र : गुवाहाटी, शिलांग एवं दीमापुर

(उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

# अनुक्रम


| क्र. सं. | आलेख का शीर्षक | लेखक का नाम | पृ. सं. |
|---|---|---|---|
| • | प्रधान संपादक की कलम से... चैतन्य महाप्रभु और भक्ति आंदोलन | प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय | 5–16 |
| 1. | लोक संगीत और नृत्य के संदर्भ में सिक्किम | चुकी भूटिया | 17–38 |
| 2. | मुखौटा कला : एक सांस्कृतिक अध्ययन | आदित्य कुमार मिश्र | 39–43 |
| 3. | भक्ति साहित्य में पूर्वोत्तर भारत की देन (शंकरदेव के विशेष संदर्भ में) | जशोधरा बोरा | 44–51 |
| 4. | 'कार्बी' जनजाति : एक संक्षिप्त परिचय | बिन्द कुमार चौहान | 52–56 |
| 5. | मिसिङ् जनजाति के लोकगीतों में जनजीवन की अभिव्यक्ति | अभिजित पायेङ् | 57–63 |
| 6. | कवीन्द्र रवीन्द्र, पंत एवं निराला | अनीता गांगुली | 64–69 |
| 7. | असम के पल रॉबसॉन : डॉ. भूपेन हजारिका | नूर जामाल | 70–74 |
| 8. | धनेश्वर इंग्टी द्वारा रचित कहानी पूर्वजों की धरती में व्यक्त सामाजिक समस्याएं | मधुछन्दा चक्रवर्ती | 75–79 |
| 9. | लोक साहित्य का अभिप्राय और अरुणाचली लोक साहित्य | सत्य प्रकाश पाल | 80–86 |
| 10. | पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की स्थिति | सुश्री मेमा चिरी | 87–94 |
| 11. | पूर्वोत्तर भारत में हिंदी | सोनम वाङमू | 95–103 |
| 12. | सूर्योदय के प्रदेश में साहित्य की किरणें | तारो सिन्दक | 104–118 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 13. | सिक्किम में हिंदी की स्थिति | **सुश्री नुनीता राई** | 119–121 |
| 14. | असम की शिक्षण व्यवस्था में हिंदी | **परिस्मिता बरदलै** | 122–124 |
| 15. | लोक साहित्य में पर्यावरण : सिक्किम राज्य के संदर्भ में | **छुकी लेप्चा** | 125–128 |
| 16. | असम की लोक संस्कृति | **प्रणामी दत्त** | 129–134 |
| 17. | असमिया रामकथा की परंपरा | **अनुशब्द** | 135–142 |
| 18. | मिसिङ् लोक साहित्य में सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का चित्रण | **देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'** | 143–181 |
| | **लेखकों के नाम व पते/इस अंक के लेखक** | | 182-183 |
| | **सदस्यता फार्म** | | 184 |

# असमिया रामकथा की परंपरा

## (माधवकंदलि, शंकरदेव और माधवदेव के रामायणी साहित्य के संदर्भ में)

—अनुशब्द

'भक्ति आंदोलन एक विराट जनांदोलन है। एक व्यापक जनतांत्रिक आंदोलन। एक अखिल भारतीय आंदोलन है।''... आदि–आदि। जब ऐसी स्थापनाओं पर गौर करता हूँ, तो मन में बरबस यह सवाल उठता है कि इस भक्ति आंदोलन का स्वरूप कितना और कैसे अखिल एवं विराट है कि उसमें कुछ क्षेत्र विशेष के कवियों एवं उनके काव्यों को ही स्थान दिया जाता है। क्या सामंतवाद के प्रति विरोध एवं मानवतावाद की स्थापना का स्वर केवल कुछ क्षेत्र विशेष के कवियों एवं उनके काव्यों में ही था। यह विचारणीय प्रश्न है। आखिर भक्ति आंदोलन का फ्रेम इतना छोटा कैसे हो सकता है, अखिल और विराट होने का अर्थ मैं तो यही समझता हूँ कि जिसमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा द्वारिका से दीमापुर तक सब शामिल हों। लेकिन बिडंबना यह है कि जब कभी हम भक्ति आंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप पर बात करते हैं, तो हमारी चर्चा के केंद्र में बंगाल के चैतन्य महाप्रभु, महाराष्ट्र के नामदेव, ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम, राजस्थान की मीरा, उत्तर प्रदेश के कबीर, सूर, जायसी, गुजरात के दादूदयाल, पंजाब के गुरुनानक, दक्षिण के आलवारों, नयनारों वसवन्ना, अक्कमहादेवी आदि प्रमुख रूप से होते हैं। उनके साहित्यक, सामाजिक, धार्मिक अवदानों पर खुलकर चर्चा होती है, लेकिन पूर्वोत्तर भारत के रचनाकारों एवं उनके रचनात्मक अवदानों पर उतना फोकस नहीं किया जाता। इस उपेक्षा की वजह क्या है ? इस पर विचार करने की जरूरत है। प्रो. गोपेश्वर सिंह ने इसका कारण भक्तिकाव्य की आलोचना और आलोचकों का 'काशी सेंट्रिक' होना बताया है।

ध्यातव्य है कि समूचे मध्यकालीन भारतीय समाज की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ कमोबेश एक जैसी ही थीं और उनसे जनता तथा समाज के लिए चिंतित और समर्पित रचनाकारों–समाज सुधारकों की मनः स्थिति भी लगभग एक जैसी ही थी। फिर चाहे वह पूर्वोत्तर भारत हो, उत्तर, दक्षिण या पश्चिम भारत हो। बावजूद इसके हम देखते हैं कि कबीर, सूर, जायसी, तुलसी, आदि के अवदानों को तो प्रमुखता से रेखांकित किया जाता है, लेकिन पूर्वोत्तर भारत के माधवकंदलि, माधवदेव, शंकरदेव, अनंत कंदलि, दुर्गावर, कायस्थ, रघुनाथ महंत आदि। सरीखे शीर्षस्थ रचनाकारों पर, उनके विचारों पर; जिनका पूर्वोत्तर भारत